



झारखण्ड गजट

असाधारण अंक

झारखण्ड सरकार द्वारा प्रकाशित

संख्या 311 राँची, शुक्रवार, 28 फाल्गुन, 1937 (श०)
18 मार्च, 2016 (ई०)

कार्मिक, प्रशासनिक सुधार तथा राजभाषा विभाग ।

संकल्प

17 फरवरी, 2016

1. उपायुक्त, कोडरमा का पत्रांक-491/गो०, दिनांक 28 मई, 2010 एवं पत्रांक-229/गो०, दिनांक 03 मई, 2014
2. कार्मिक, प्रशासनिक सुधार तथा राजभाषा विभाग, झारखण्ड, राँची का पत्रांक- 6268, दिनांक 20 अक्टूबर, 2010; पत्रांक-3245, दिनांक 16 जून, 2011; पत्रांक-5928, दिनांक 21 सितम्बर, 2011 एवं संकल्प सं०-1097, दिनांक 10 फरवरी, 2015 तथा संकल्प सं०-3928, दिनांक 29 अप्रैल, 2015
3. आयुक्त, उत्तरी छोटानागपुर प्रमंडल, हजारीबाग का पत्रांक-191/आ०गो०, दिनांक 17 अक्टूबर, 2011

4. श्री शुभेन्द्र झा, सेवानिवृत्त भा0प्र0से0, विभागीय जाँच पदाधिकारी, झारखण्ड का पत्रांक-193/2015, दिनांक 21 अगस्त, 2015

ज्ञापांक-5/आरोप-1-83/2014 कां-1481--श्री भीष्म कुमार, झा०प्र०से० (कोटि क्रमांक-539, गृह जिला-नालन्दा), तत्कालीन जिला परिवहन पदाधिकारी, कोडरमा के विरुद्ध मो० आरीफ अंसारी, सदस्य, जिला पन्द्रह सूत्री कार्यक्रम समिति, कोडरमा द्वारा परिवाद पत्र संख्या-15/09, दिनांक 18 अगस्त, 2009 प्राप्त है। परिवाद पत्र के आलोक में उपायुक्त, कोडरमा का जाँच प्रतिवेदन पत्रांक-491/गो०, दिनांक 28 मई, 2010 द्वारा प्राप्त है। इसके आलोक में इनसे विभागीय पत्रांक-6268, दिनांक 20 अक्टूबर, 2010 द्वारा स्पष्टीकरण की माँग की गयी है, जिसके अनुपालन में इनका स्पष्टीकरण पत्रांक-174, दिनांक 19 फरवरी, 2011 के माध्यम से प्राप्त है।

श्री कुमार के स्पष्टीकरण पर विभागीय पत्रांक-3245, दिनांक 16 जून, 2011 द्वारा उपायुक्त, कोडरमा से तथा पत्रांक-5928, दिनांक 21 सितम्बर, 2011 द्वारा आयुक्त, उत्तरी छोटानागपुर प्रमंडल, हजारीबाग से मंतव्य की माँग की गयी है। आयुक्त, उत्तरी छोटानागपुर प्रमंडल, हजारीबाग का मंतव्य पत्रांक-191/आ०गो०, दिनांक 17 अक्टूबर, 2011 द्वारा प्राप्त है, जिसमें इनके स्पष्टीकरण को स्वीकार नहीं किया गया है। उपायुक्त, कोडरमा का मंतव्य पत्रांक-229/गो०, दिनांक 03 मई, 2014 द्वारा प्राप्त है।

उक्त तथ्यों के आलोक में श्री कुमार के विरुद्ध प्रपत्र- 'क' का गठन विभाग स्तर पर किया गया है, जिसमें इनके विरुद्ध निम्न आरोप लगाये गये हैं:-

1. जिला परिवहन पदाधिकारी, कोडरमा, भीष्म कुमार द्वारा अपने कैम्प कार्यालय, राँची के पत्रांक-01, दिनांक 21 अक्टूबर, 2008 के द्वारा गलत जानकारी देते हुए कि वीरेन्द्र कुमार मेहता संविदा के आधार पर कोडरमा कार्यालय में कम्प्यूटर ऑपरेटर के पद पर कार्यरत हैं, उनसे पुनः कार्य लेने के लिए सरकार से अनुमति माँगी गई थी।

2. परिवहन पदाधिकारी के इस पत्र के आलोक में अवर सचिव, परिवहन विभाग, झारखण्ड, राँची के द्वारा आदेश ज्ञापांक-1105, दिनांक 24 अक्टूबर, 2008 निर्गत किया गया, जिसके आलोक में परिवहन पदाधिकारी द्वारा वीरेन्द्र कुमार मेहता को कम्प्यूटर ऑपरेटर के पद पर नियुक्त कर लिया गया।

3. वीरेन्द्र कुमार मेहता वही व्यक्ति हैं, जिन्हें उपायुक्त, कोडरमा द्वारा परिवहन कार्यालय में दैनिक वेतन पर डाटा इन्ट्री हेतु रखा गया था। बाद में परिवहन कार्यालय में कम्प्यूटर के जानकार कर्मचारियों की प्रतिनियुक्ति होने एवं कोडरमा परिवहन कार्यालय में हुए करोड़ों के घोटालों में इनकी संलिप्तता के कारण अपने पत्रांक- 569/गो०, दिनांक 27 मई, 2008 के द्वारा हटाने का आदेश दिया गया था।

4. अपने पदस्थापन के बाद परिवहन पदाधिकारी, श्री कुमार के द्वारा एक साजिश के तहत वीरेन्द्र कुमार मेहता को पुनः बहाल कराने के लिए परिवहन विभाग के वरीय पदाधिकारियों को गलत सूचना देते हुए उन्हें बहाल कराया गया।

5. परिवहन कार्यालय के कर्मचारियों के लिए सरकार से माँग गये आवंटन में श्री कुमार द्वारा संविदा पर नियुक्त श्री वीरेन्द्र कुमार मेहता के लिए भी महगाई भत्ता, आवास भत्ता आदि की माँग की गई।

6. इस प्रकार श्री कुमार द्वारा गलत जानकारी देते हुए सचिव, परिवहन विभाग, राँची से श्री वीरेन्द्र कुमार मेहता को कम्प्यूटर ऑपरेटर के पद पर पुनः संविदा के आधार पर कार्य करने हेतु अनुरोध किया गया तथा परिवहन विभाग से श्री मेहता के महगाई भत्ता, आवास भत्ता एवं चिकित्सा भत्ता के भुगतान हेतु आवंटन की माँग की गई, जो नियम के प्रतिकूल है।

श्री कुमार के विरुद्ध प्राप्त आरोपों के लिए इनके विरुद्ध विभागीय संकल्प सं०-1097, दिनांक 10 फरवरी, 2015 द्वारा विभागीय कार्यवाही संचालित किया गया है तथा श्री अशोक कुमार सिन्हा, सेवानिवृत्त भा०प्र०से०, विभागीय जाँच पदाधिकारी, झारखण्ड को संचालन पदाधिकारी नियुक्त किया गया है। तत्पश्चात् श्री सिन्हा के स्थान पर श्री शुभेन्द्र झा, सेवानिवृत्त भा०प्र०से०, विभागीय जाँच पदाधिकारी, झारखण्ड को विभागीय संकल्प सं०-3928, दिनांक 29 अप्रैल, 2015 द्वारा संचालन पदाधिकारी नियुक्त किया गया है।

श्री झा द्वारा श्री कुमार के विरुद्ध विभागीय कार्यवाही संचालित कर जाँच प्रतिवेदन पत्रांक-193/2015, दिनांक 21 अगस्त, 2015 द्वारा समर्पित किया गया है। संचालन पदाधिकारी का जाँच प्रतिवेदन निम्नवत् है:-

1. जिला परिवहन कार्यालय, कोडरमा में श्री कुमार के प्रभार ग्रहण की तिथि 3 जुलाई, 2008 के पूर्व श्री वीरेन्द्र कुमार मेहता कम्प्यूटर ऑपरेटर के रूप में 08 मई, 2003 से 30 मई, 2008 तक दैनिक पारिश्रमिक पर कार्यरत रहे हैं। इस अवधि में तत्कालीन उपायुक्त, कोडरमा द्वारा श्री मेहता के पक्ष में कार्य अनुभव प्रमाण-पत्र निर्गत किये गये हैं तथा उनके कार्य की सराहना की गयी है।

2. जून, 2008 में परिवहन कार्यालय में टैक्स टोकन चोरी तथा वित्तीय अनियमितता के मामले प्रकाश में आए थे। इसकी जाँच अनुमंडल पदाधिकारी, कोडरमा तथा अपर समाहर्ता, कोडरमा द्वारा की गयी है एवं इससे संबंधित कोडरमा थाना में कांड सं०-250/2008 दर्ज करायी गयी थी। इस कांड के अनुसंधान में अथवा अनुमंडल पदाधिकारी, कोडरमा तथा अपर समाहर्ता, कोडरमा के जाँच-प्रतिवेदन में श्री मेहता की संलिप्तता अथवा संदिग्ध भूमिका का कोई उल्लेख नहीं है।

3. उपायुक्त, कोडरमा के ज्ञापांक-569, दिनांक-27 मई, 2008 द्वारा जिला परिवहन कार्यालय से श्री मेहता को इस आधार पर कार्यमुक्त किया गया है कि इस कार्यालय में कंप्यूटर कार्य के जानकार लिपिक पदस्थापित कर दिये गये हैं। भविष्य में आवश्यकता होने पर उन्हें पुनः कार्य में लगाने का उल्लेख इस पत्र में है।

4. श्री कुमार द्वारा प्रभार ग्रहण किये जाने के उपरांत परिवहन कार्यालय में पदस्थापित कर्मियों के अलावा कंप्यूटर कार्य में दक्ष कर्मचारी की आवश्यकता महसूस की गयी। इसकी जानकारी मौखिक रूप से तत्कालीन उपायुक्त, कोडरमा को दी गयी थी, जिसका खंडन उपस्थापन पदाधिकारी द्वारा नहीं किया गया।

5. राज्य स्तरीय बैठक में परिवहन सचिव को भी उन्होंने अपनी आवश्यकता से अवगत कराते हुए लिखित अनुरोध पत्र समर्पित किया था। श्री मेहता को संविदा पर रखने तथा इनके दैनिक पारिश्रमिक भुगतान में कोई अनियमितता नहीं हुई है। श्री मेहता की संलिप्तता परिवहन कार्यालय में हुए वित्तीय गड़बड़ी/घोटाले में प्रमाणित नहीं है। पूर्व के उपायुक्तों द्वारा श्री मेहता को निर्गत कार्यानुभव प्रमाण-पत्रों को ध्यान में रखते हुए इनकी पुनर्नियुक्ति की अनुशंसा श्री कुमार द्वारा कार्यहित में परिवहन सचिव से राज्य स्तरीय बैठक में किया गया था।

6. इस प्रकार संदिग्ध व्यक्ति की पुनर्नियुक्ति जिला परिवहन कार्यालय में कराने का आरोप प्रमाणित नहीं होता है। चूँकि आरोपित पदाधिकारी के विरुद्ध वित्तीय अनियमितता बरतने का आरोप प्रमाणित नहीं है, श्री मेहता की भूमिका जिला परिवहन कार्यालय में जून, 2008 के पूर्व की अनियमितता में प्रमाणित नहीं है, श्री मेहता को किसी प्रकार के अधिकाई भुगतान नहीं किया गया है तथा आरोपित पदाधिकारी के कार्यकाल में राजस्व संग्रहण की उपलब्धि लक्ष्य के अनुरूप है। अतः आरोपित पदाधिकारी पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करते हुए इन्हें दोषमुक्त किया जा सकता है।

श्री कुमार के विरुद्ध आरोप तथा संचालन पदाधिकारी से प्राप्त जाँच प्रतिवेदन की समीक्षा की गयी। समीक्षा में निम्न तथ्य पाये गये:-

1. श्री विरेन्द्र कुमार मेहता श्री कुमार के प्रभार प्रभार ग्रहण करने की तिथि दिनांक 3 जुलाई, 2008 के पूर्व कम्प्यूटर ऑपरेटर के रूप में दिनांक 08 मई, 2003 से 30 मई, 2008 तक दैनिक पारिश्रमिक पर कार्यरत थे। इस अवधि में इनके कार्य की सराहना तत्कालीन उपायुक्तों द्वारा की गयी है।

2. जून, 2008 में परिवहन कार्यालय, कोडरमा में हुए टैक्स टोकन चोरी तथा वित्तीय अनियमितता के लिए दर्ज कोडरमा थाना कांड संख्या-250/2008 के अनुसंधान में श्री मेहता की संलिप्पता अथवा संदिग्ध भूमिका नहीं पायी गई है।
3. जिला परिवहन कार्यालय, कोडरमा में कंप्यूटर कार्य के जानकार लिपिक पदस्थापित होने के कारण उपायुक्त, कोडरमा के ज्ञापांक-569, दिनांक 27 मई, 2008 द्वारा श्री मेहता को कार्यमुक्त किया गया था। भविष्य में आवश्यकता होने पर उन्हें पुनः कार्य में लगाने का उल्लेख इस पत्र में है।
4. श्री मेहता को पारिश्रमिक भुगतान में कोई अनियमितता नहीं हुई है।
5. श्री कुमार के जिला परिवहन पदाधिकारी, कोडरमा के पद पर कार्यावधि दिनांक 03 जुलाई, 2008 से 20 सितम्बर, 2010 तक में राजस्व की वसूली लक्ष्य के अनुरूप है।
6. श्री विरेन्द्र कुमार मेहता, कम्प्यूटर ऑपरेटर जिला परिवहन कार्यालय, कोडरमा में अब कार्यरत नहीं हैं।

उक्त स्थिति में मामले को समाप्त करने हेतु निर्णय लिया जाता है।

झारखण्ड राज्यपाल के आदेश से,

दिलीप तिर्की,
सरकार के उप सचिव।
